जैन
# पथप्रदर्शक
ए-4, बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)
नैतिक एवं सामाजिक चेतना का अग्रदूत निष्पक्ष पाक्षिक

**चित्त को जीत लेनेवालों को छह खण्डों की नहीं, अखण्ड आत्मा की प्राप्ति होती है।**

ह्न बिन्दु में सिन्धु, पृष्ठ-20

वर्ष : 27, अंक : 7 | **सम्पादक :** पण्डित रतनचन्द भारिल्ल | आजीवन शुल्क : 251 रुपये
जुलाई (प्रथम) 2004 | **प्रबन्ध सम्पादक :** पं. संजीवकुमार गोधा व पं. जितेन्द्र वि. राठी | वार्षिक शुल्क : 25 रुपये, एकप्रति : 2/-

# शिक्षण शिविरों के माध्यम से घर-घर में संस्कार पहुचें

**1. जयपुर (राज.):** यहाँ श्री पार्श्वनाथ दिगम्बर जैन मन्दिर, बापूनगर में दिनांक 6 जून से 16 जून, 2004 तक बाल संस्कार शिक्षण शिविर में पण्डित श्रुतेशजी सातपुते शास्त्री एवं पण्डित जितेन्द्रजी राठी शास्त्री द्वारा बालबोध पाठमाला की कक्षायें ली गई।

दिनांक 16 जून को समस्त विद्यार्थियों की परीक्षा लेकर 19 जून को श्री महेन्द्रजी पाटनी की अध्यक्षता में समस्त उत्तीर्ण विद्यार्थियों को पारितोषिक वितरित किया गया।

शिविर में श्री सुरेन्द्रजी पाटनी, श्री राजेन्द्रजी जैन एवं श्रीमती मंजुलताजी छाबड़ा का सराहनीय सहयोग रहा। **ह्न सुरेन्द्र पाटनी**

**2. जयपुर (राज.):** यहाँ श्री दिगम्बर जैन मन्दिर, जनता कॉलोनी में दिनांक 15 मई से 30 जून, 2004 तक बाल संस्कार शिक्षण-शिविर में पण्डित राजेशकुमारजी शास्त्री शाहगढ़ ने प्रतिदिन बालकों को नैतिक एवं धार्मिक संस्कार दिये ।

अन्तिम दिन समस्त छात्रों की परीक्षा ली गई तथा उत्तीर्ण छात्रों को पुरस्कृत किया गया।

शिविर में श्रीमती चन्द्रादेवी एवं श्रीमती नीलम जैन का सराहनीय सहयोग रहा।

ज्ञातव्य है कि यहाँ पर आपके द्वारा साप्ताहिक कक्षा भी संचालित होती है।

दिगम्बर जैन मुलतान मंदिर आदर्शनगर में भी आपके द्वारा सप्ताह में दो दिन बालकों की एवं एक दिन महिलाओं की कक्षा नियमितरूप से संचालित की जाती है। यहाँ भी बालकों की परीक्षा लेकर पुरस्कृत किया गया।

**3. खण्डवा (म.प्र.):** यहाँ श्री दिगम्बर जैन मुमुक्षु मण्डल, खण्डवा के तत्त्वावधान में दिनांक 12 जून से 18 जून, 2004 तक बाल संस्कार शिविर एवं गणधरवलय मण्डल विधान का आयोजन किया गया।

शिविर में पण्डित सुशीलकुमारजी राघौगढ़, पण्डित प्रदीपकुमारजी झांझरी उज्जैन एवं पण्डित रमेशचन्दजी बांझल के प्रवचनों का लाभ मिला।

इस अवसर पर पण्डित रितेशजी शास्त्री सनावद, पण्डित अनिलकुमारजी शास्त्री खनियांधाना, पण्डित प्रयंककुमारजी शास्त्री रहली, पण्डित सुनीलजी बेलोकर सुलतानपुर एवं पण्डित दीपकजी 'धवल' भोपाल द्वारा के.जी. प्रथम भाग से लेकर वीतराग-विज्ञान भाग-1 तक पाँच कक्षाओं का संचालन किया गया।

इस अवसर पर बाल ब्र. जतीशचन्दजी शास्त्री सनावद के निर्देशन में श्री गणधरवलय मण्डल विधान का आयोजन भी किया गया।

सम्पूर्ण शिविर में श्री नरेन्द्रकुमारजी जैन खण्डवावालों का विशेष सहयोग रहा।

**4. बांसवाड़ा (राज.) :** यहाँ श्री ज्ञायक चैरिटेबल ट्रस्ट द्वारा दिनांक 2 जून से 6 जून, 2004 तक शिक्षण-शिविर का आयोजन किया गया। शिविर में पण्डित रितेशजी शास्त्री डडूका, पण्डित आकाशजी शास्त्री डडूका एवं पण्डित राकेशजी शास्त्री दाहोद द्वारा सदाचार प्रेरक विषयों पर कक्षायें ली गई।

प्रात: पण्डित राजकुमारजी शास्त्री के षट् आवश्यक विषय पर प्रवचन हुये तथा रात्रि में पण्डित चेतनकुमारजी शास्त्री कोटा, पण्डित राकेशकुमारजी शास्त्री दाहोद, पण्डित आकाशजी शास्त्री डडूका, पण्डित लक्ष्मीचन्दजी डूंगरपुर, पण्डित नितेशजी शास्त्री अलीगढ़ एवं पण्डित संजयजी शास्त्री अरथूना के प्रवचनों का लाभ समाज को मिला।

शिविर में छात्रों की प्रतिभा प्रदर्शन हेतु अनेक प्रतियोगिताओं का आयोजन हुआ; जिसमें 10 योग्य छात्रों का चयन किया गया।

**- धनपाल ज्ञायक**

**5. नागपुर (महा.) :** श्री कुन्दकुन्द दिगम्बर जैन स्वाध्याय मण्डल एवं अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन के संयुक्त तत्त्वावधान में श्रीमती शान्ताबाई मनोहरराव सोईतकर परिवार द्वारा दिनांक 5 जून से 13 जून, 04 तक सप्तम बाल संस्कार शिविर का आयोजन किया गया।

शिविर में शिशु, बाल, युवा एवं प्रौढ़ वर्गों की मराठी एवं हिन्दी भाषा में 9 कक्षाओं के माध्यम से 225 विद्यार्थियों ने लाभ लिया।

प्रात: पाँच से रात्रि 10 बजे तक पूजन, कक्षा, भक्ति, प्रवचन एवं कार्यक्रमों द्वारा जैनागम का मर्म शिविरार्थियों को सिखाया गया।

**(शेष पृष्ठ 5 पर .....)**

*** आमन्त्रण पत्र शीघ्र भेजें ***

**दशलक्षण पर्व में प्रवचनकार विद्वान बुलाने हेतु आमंत्रण-पत्र शीघ्र भेजें; ताकि तदनुसार निर्णय करके निर्धारित स्थानों की सूची 1 अगस्त, 2004 के अंक में प्रकाशित की जा सकें।**

**पत्र में अपना पूर्ण पता पिन कोड सहित तथा फोन नं. एस.टी.डी. कोड सहित अवश्य लिखें। यदि मोबाइल नं. हो तो वह भी लिखें।**

सम्पादकीय –

# पञ्चास्तिकाय परिशीलन

11 ह्न रतनचन्द भारिल्ल

## गाथा १५

**भावस्स णत्थि णासो णत्थि अभावस्स चेव उप्पादो।**
**गुणपज्जएसु भावा उप्पादवए पकुव्वंति ।।15।।**

(हरिगीत)

**सत्द्रव्य का नहिं नाश हो अरु असत् का उत्पाद ना।**
**उत्पाद-व्यय होते सतत सब द्रव्य-गुणपर्याय में ।।15।।**

द्रव्य के कथन व सप्तभंगी का स्वरूप पिछली गाथा में कह आये हैं अब इस गाथा में आचार्य कुन्दकुन्ददेव कहते हैं कि भाव का अर्थात् सत् का कभी नाश नहीं होता तथा अभाव का अर्थात् असत् का कभी उत्पाद नहीं होता। सत् द्रव्य अपने-अपने गुण-पर्यायों से उत्पाद-व्यय करते हैं।

टीकाकार अमृतचन्द्रदेव इसी बात का स्पष्टीकरण करते हुये कहते हैं कि यहाँ उत्पाद में असत् के प्रादुर्भाव का और व्यय में सत् के विनाश का निषेध किया है। भाव का अर्थात् सत् द्रव्य का द्रव्यरूप से विनाश नहीं है। अभाव का अर्थात् असत् का-अन्यद्रव्य का अन्यद्रव्य रूप से उत्पाद नहीं है; परन्तु सत्द्रव्यों के विनाश एवं असत् द्रव्यों के उत्पाद बिना ही द्रव्य अपने गुण-पर्यायों में विनाश व उत्पाद करते हैं।

कवि हीराचन्दजी ने भी अपने हिन्दी पद्य में यही कहा है कि ह्न

(दोहा)

**दरब वस्तु का नास नहिं, नहिं अदरब उत्पाद।**
**गुण-परजै करि दरब कै, व्यय-उत्पाद विवाद।।102।।**

आचार्य अमृतचन्द्र की टीका में दिए गए घी के उदाहरण को पद्य की भाषा में कवि हीराचन्दजी ने निम्नानुसार कहा है ह्न

(सवैया इकतीसा)

**जैसैं घी उपजै तै गोरस बिना न उपजै,**
**दही के विनसै नाहिं, गोरस विनासा है।**
**एक परजाय होइ नासै परजाय एक,**
**गोरस सदैव सुद्ध भेद कै विकासा है।।**
**तैसैं द्रव्य नासै नाहिं होइ द्रव्य नवा कछू,**
**पर्जयकै लोक माहिं नानाभेद भासा है।**
**स्यादवाद अंग सरवंग वस्तु साधि-साधि,**
**सिवगामी जीवहूँनै आतमा निकासा है ।।103।।**

जिसप्रकार घी की उत्पत्ति में गोरसरूप सत् का विनाश नहीं है तथा गोरस से भिन्न पदार्थान्तर का अर्थात् असत् का उत्पाद नहीं है; किन्तु गोरस को ही सत् का विनाश और असत् का उत्पाद किए बिना ही मक्खन पर्याय का विनाश तथा घी पर्याय की उत्पत्ति होती है।

उसीप्रकार समस्त द्रव्यों की नवीन पर्यायों की उत्पत्ति में सत् का विनाश नहीं तथा असत् का उत्पाद नहीं होता।

असत् के उत्पाद से और सत् के विनाश से क्या दोष उत्पन्न होगा ह्न यह बताते हुए कवि हीराचन्दजी ने आगे कहा है ह्न

(दोहा)

**असत दरवकै उपजतैं, उपजै दरव अनंत।**
**सत विनासतैं दरव सब, जुगपत नास करंत।।104।।**
**तातैं परजैमैं सधै, उपज-विनास अनेक।**
**दरवरूप सासुत अचल, गुन परजय की टेक।।105।।**

यदि असत् द्रव्य की उत्पत्ति मान ली जाय तो अनन्त नवीन द्रव्यों की उत्पत्ति की बाढ़-सी आ जायेगी तथा सत् का सर्वथा नाश मान लिया जाये तो लोक के सभी द्रव्यों के एकसाथ विनाश का प्रसंग प्राप्त होगा।

इसी बात को गुरुदेवश्री कानजी स्वामी ने अपने व्याख्यान में कहा है कि ह्न जो वस्तु है, उसका कभी नाश नहीं होता और जो वस्तु नहीं है; उसका कभी उत्पाद नहीं होता। इसकारण द्रव्यार्थिकनय से द्रव्य का नाश तथा उत्पाद नहीं होता। जो भी जीव सिद्ध हुए है, उनका नाश नहीं होता हैं, मात्र उनकी पर्यायें पलटती हैं।

लकड़ी जलकर खाक हो जाने से परमाणुओं का नाश नहीं होता, मात्र परमाणुओं का रूपान्तरण होता है।

निश्चय से जगत में जो वस्तु नहीं है, वह नयी नहीं होती, गधे के सींग नहीं हैं तो नये उत्पन्न नहीं होते। खेत में नया धान्य पकता है, उस धान्य के जगत में जो परमाणु सूक्ष्मरूप में थे, उनका स्थूलरूप परिणमन होता है; परन्तु परमाणु नये नहीं होते।

सारांश यह है कि ह्न जैसे दही के विनाश और घी के उत्पाद से गोरस का विनाश नहीं होता तथा घी गोरस से ही उत्पन्न होता है, अन्य द्रव्य से नहीं। एक पर्याय उत्पन्न होती है, एक पर्याय का नाश होता है, गोरसरूप द्रव्य दोनों में सदैव विद्यमान रहता है।

गुरुदेवश्री ने अनेक उदाहरण दे-देकर इतना सरल कर दिया है कि अब विशेष कुछ कहने की जरूरत नहीं है।

इस गाथा को समझने से हमारी यह श्रद्धा अत्यन्त दृढ़ हो जाती है कि मेरा कभी नाश नहीं होता, मात्र पर्याय पलटती है। पर्याय का पलटना भी हमारे हित में ही है; क्योंकि इसके बिना जीव को वर्तमान आकुलतामय दु:ख से मुक्त होकर निराकुल सुख की प्राप्ति संभव ही नहीं है। अत: ऐसे वस्तुस्वरूप की समझ और श्रद्धा अति आवश्यक है। •

## गाथा-16

**भावा जीवादीया जीवगुणा चेदणा य उवओगो।**
**सुरणरणारयतिरिया जीवस्स य पज्जया बहुगा ।।16।।**

(हरिगीत)

**जीवादि ये सब भाव हैं जिय चेतना उपयोगमय।**
**देव-नारक-मनुज-तिर्यक् जीव की पर्याय हैं।।16।।**

15 वीं गाथा में यह कह आये हैं कि ह्न यद्यपि सत् का कभी नाश नहीं होता और असत् का कभी उत्पाद नहीं होता। तथापि सत् द्रव्य अपने-अपने गुण-पर्यायों से उत्पाद-व्यय करते रहते हैं। ऐसा ही वस्तु का सहजस्वभाव है।

अब इस 16 वीं गाथा में आचार्य कुन्दकुन्द यह कहते हैं कि जीवादि छहद्रव्य भाव हैं, पदार्थ हैं तथा जीव के गुण चेतना तथा उपयोग हैं और

जीव की पर्यायें देव-मनुष्य-नारक-तिर्यंचरूप अनेक हैं।

यहाँ टीकाकार आचार्य अमृतचन्द्र ने जो कहा, उसका भाव यह है कि ह्न 'यहाँ इस गाथा में भावों का अर्थात् द्रव्यों का तथा गुणों और पर्यायों का कथन किया गया है। जीवादि छह पदार्थ भाव हैं। यद्यपि उनके गुण व पर्यायें प्रसिद्ध हैं, तथापि अगली गाथा में जीव की बात उदाहरण के रूप में लेना है, इसलिए उस उदाहरण को प्रसिद्ध करने के लिए यहाँ जीव के गुणों और पर्यायों का कथन किया गया है।

जीव के दो चेतनाएँ हैं ह्न 1. ज्ञान की अनुभूति-स्वरूप शुद्धचेतना तथा 2. कार्यानुभूतिस्वरूप एवं कर्मफलानुभूतिस्वरूप अशुद्धचेतना है। उन दोनों भेदरूप चैतन्य का अनुसरण करनेवाला आत्मा का परिणाम उपयोग है। उपयोग भी शुद्धाशुद्धरूप है, सविकल्प-निर्विकल्प स्वरूप है।

जीव की पर्यायें भी शुद्ध और अशुद्ध के भेद से दो प्रकार की हैं। अगुरुलघुगुण की हानि-वृद्धि से उत्पन्न होनेवाली पर्यायें शुद्ध हैं और गाथा में कही गई देव-नारक-तिर्यंच-मनुष्य पर्यायें परद्रव्यों के सम्बन्ध से उत्पन्न होती हैं, इसकारण अशुद्ध हैं।

कवि हीरानन्दजी भी इसी बात को पद्य में कहते हैं ह्न

(दोहा)

**जीव आदि भावहु विषै, गुन चेतन उपयोग।**
**सुर-नर-नारक-पसु विविध, परजै जीव सजोग।।106।।**

(सवैया इकतीसा)

**ग्यान अनुभूति सोई ग्यान सुद्ध चेतना है,**
**कर्म कर्मफलरूप प्रनमैं असुद्ध है।**
**चेतनानुगामी परनाम सुद्धासुद्धरूप,**
**भेद निरभेदवान उपयोग लुब्ध है।।**
**देव-नर-नारक-पसु विभाग परजाय,**
**सुद्ध दसा सुद्ध परजाय परबुद्ध है।**
**ऐसैं जीव भाव-परभावसौं जुदा न आप,**
**कालजोग पाय पाय आपहीमैं सुद्ध है।।107।।**

पंचास्तिकाय गाथा 16 पर प्रवचन करते हुए गुरुदेवश्री कानजी स्वामी ने जो कहा उसका भाव इसप्रकार है ह्न

''वैसे द्रव्य-गुण-पर्याय ह्न तीनों को भाव कहते हैं; परन्तु यहाँ तो द्रव्य को भाव शब्द से सम्बोधित किया है। इन द्रव्यों में जीव प्रधान है, आत्मा उत्तम पदार्थ है। उसका स्वरूप बताने के लिए यहाँ जीव का असाधारण लक्षण कहते हैं।

जीवद्रव्य का निज लक्षण एक तो शुद्धाशुद्ध अनुभूतिरूप चेतना है। जिसके तीन भेद हैं ह्न 1. ज्ञानचेतना, 2. कर्मचेतना, 3. कर्मफलचेतना।

दूसरा लक्षण शुद्धाशुद्ध चैतन्यपरिणतिरूप उपयोग है।

ये दोनों लक्षण जीवद्रव्य के गुण हैं। तीसरा लक्षण ह्न जीव को जो अलग-अलग प्रकार की देव-नारकी-मनुष्य-तिर्यंच आदि अशुद्ध व्यंजन पर्यायें हैं, वे भी जीव के लक्षण हैं।

भावार्थ यह है कि आत्मा के दो लक्षण कहे हैं ह्न चेतना और उपयोग। यह सामान्य लक्षण ज्ञान की प्रधानता से कहे है। अनुभूति का नाम चेतना है। वह अनुभूति ज्ञानचेतना, कर्मचेतना और कर्मफलचेतना ह्न ऐसी तीनप्रकार की है। जो ज्ञानभाव से स्वरूप का वेदन होता है, वह ज्ञानचेतना है। द्रव्य का यह लक्षण कहकर द्रव्य में पर्याय का अस्तित्व बता दिया है। जो ज्ञान की पर्याय होती है, वह आत्मा है। ऐसा लक्षण कहकर आत्मा की प्रसिद्धि की है। शुद्ध-अशुद्ध का भेद किए बिना सामान्य द्रव्य को समझाया है।

कर्म का वेदन कर्मचेतना है। राग-द्वेष-कर्म हैं, वे आत्मा के कार्य हैं। राग-द्वेषरूप विकार का वेदन करने से भी आत्मा जाना जा सकता है। इसकारण विकार का वेदन भी आत्मा का लक्षण है। उस रागादि विकार से ही यह नक्की होता है कि यह जीव है। राग-द्वेष में जीव ही एकाग्र होता है, जड़ नहीं। इसप्रकार राग-द्वेष जीव की पहचान कराते हैं। वैसे भी राग-द्वेष जीव के चारित्रगुण की ही विकारी पर्याय है।

शुद्धता-अशुद्धता मिलकर ही तो पूरा द्रव्य होता है, अन्यत्र राग-द्वेष को जीव का अनात्मभूतलक्षण कहा है; क्योंकि रागादि का अभाव हो जाता है; परन्तु यहाँ तो आत्मभूतलक्षण कहा है; क्योंकि उस पर्याय से जीव ज्ञात होता है, जीव की पहचान होती है।

जिसके द्वारा वस्तु लक्षित हो, उसे लक्षण कहते हैं। यहाँ राग के द्वारा चैतन्य आत्मा लक्षित होता है, इसलिए राग को जीव का लक्षण कहा है। समयसार में तो जहाँ राग को पुद्गल का कहा है, वह राग को टालने की अपेक्षा कहा है; परन्तु यहाँ राग-द्वेष की पर्याय जीव के अस्तित्व को बतलाती है; क्योंकि वह जीव में होती है, पुद्गल में नहीं; इसकारण उसे जीव का लक्षण कहा है।

यहाँ चेतना और उपयोग को गुण कहा है और नारकी, देव, मनुष्य, तिर्यंच की व्यंजनपर्यायों को पर्याय कहा है। समयसार में दृष्टिप्रधान कथन है और यहाँ ज्ञानप्रधान कथन है। चेतना तीन प्रकार की है ह्न पहली ज्ञानभावरूप रहना ज्ञानचेतना है। दूसरी कर्म का वेदन करना वह कर्मचेतना है। जो दया, दान, काम-क्रोधादि भाव आत्मा में होते हैं। जीव उनका अनुभव करता है। सुख-दुःख का वेदन करना जीव का लक्षण है। जगत के कोई पदार्थ आत्मा को राग नहीं कराते, राग करने की जीव की अपनी योग्यता है; क्योंकि उस लक्षण के द्वारा जीव ज्ञात होता है।

तीसरी कर्मफल का वेदन करना कर्मफलचेतना है। जो हर्ष-शोक आत्मा के गुण द्वारा होता है, वह चैतन्य की सत्ता को बतलाता है। इसकारण हर्ष-शोक को आत्मा का गुण कहा है और वह आत्मा का लक्षण है; क्योंकि उसे आत्मा स्वयं करता है; कर्म उसे नहीं कराता; क्योंकि वह कर्म का गुण नहीं है। वह आत्मा की क्षणिक पर्याय में होता है; परन्तु वह अपने त्रिकाली स्वभाव में नहीं है। आत्मा में होनेवाले हर्ष-शोक कर्म के कारण से नहीं होते; परन्तु जब आत्मा हर्ष-शोकरूप परिणमता है तो बाहर में कर्म का उदय अवश्य होता है। हर्ष-शोक होते तो आत्मा में ही हैं; अत: उनका होना आत्मा के अस्तित्व को बताता है। इसप्रकार चेतना के ज्ञानचेतना, कर्मचेतना और कर्मफल चेतना ह्न ये तीनप्रकार कहे।

प्रवचनसार में जो राग-द्वेषादि के परिणाम जीव के कहे हैं, वह वर्तमान स्वज्ञेय कैसा है ह्न यह बतलाने के लिए कहे हैं। यहाँ पंचास्तिकाय में जीव स्वयं कैसा है ह्न यह बतलाते हैं। चैतन्य की अस्ति में राग-द्वेष, हर्ष-शोक के परिणाम होते हैं, इसलिए वे जीवास्तिकाय के अस्तित्व को बतलाते हैं। कर्म रागादि करते हैं या निमित्त के कारण रागादि होते हैह्न ऐसा माननेवाले को पर्यायदृष्टि छोड़कर स्वभाव दृष्टि करने का अवसर नहीं रहता। **(शेष पृष्ठ 5 पर...)**

## श्री वीतराग-विज्ञान विद्यापीठ परीक्षा बोर्ड

### श्री टोडरमल स्मारक भवन

ए-4, बापूनगर, जयपुर - 302015 (राजस्थान)

### ग्रीष्मकालीन परीक्षा कार्यक्रम सत्र-2004

| दिन व दिनांक | नाम ग्रन्थ |
|---|---|
| शुक्रवार 30 जुलाई 2004 | 1. बालबोध पाठमाला भाग-1 (बा.प्रथम खण्ड) मौखिक<br>2. जैन बालपोथी भाग-1 (मौखिक)<br>3. वीतराग-विज्ञान पाठमाला भाग-1(प्रवेशिका प्रथम खण्ड)<br>4. तत्त्वज्ञान पाठमाला भाग-1<br>5. छहढाला (पूर्ण)<br>6. तत्त्वार्थसूत्र (मोक्षशास्त्र) पूर्वार्द्ध<br>7. मोक्षमार्गप्रकाशक (पूर्वार्द्ध)<br>8. जैन सिद्धान्त प्रवेशिका (गोपालदासजी बरैया कृत)<br>9. विशारद प्रथम खण्ड (प्रथम वर्ष) |
| शनिवार 31 जुलाई 2004 | 1. बालबोध पाठमाला भाग-2 (बा.द्वितीय खण्ड) मौखिक<br>2. जैन बालपोथी भाग-2 (मौखिक)<br>3. वीतराग-विज्ञान पाठमाला भाग2(प्रवेशिका द्वितीय खण्ड)<br>4. तत्त्वज्ञान पाठमाला भाग-2<br>5. द्रव्यसंग्रह (पूर्ण)<br>6. तत्त्वार्थसूत्र (मोक्षशास्त्र) उत्तरार्द्ध<br>7. लघु जैनसिद्धान्त प्रवेशिका (सोनगढ़)<br>8. मोक्षमार्गप्रकाशक (उत्तरार्द्ध)<br>9. विशारद प्रथम खण्ड (द्वितीय वर्ष)<br>10. विशारद द्वितीय खण्ड (प्रथम वर्ष) |
| सोमवार 1 अगस्त 2004 | 1. बालबोध पाठमाला भाग-3 (बा.तृतीय खण्ड) मौखिक<br>2. वीतराग-विज्ञान पाठमाला भाग-3 (प्रवेशिका तृतीय खण्ड)<br>3. रत्नकरण्डश्रावकाचार (पूर्ण)<br>4. पुरुषार्थसिद्ध्युपाय (पूर्ण)<br>5. विशारद द्वितीय खण्ड (द्वितीय वर्ष) |

**नोट -**

(1) सुविधानुसार परीक्षा का समय सुबह 9 बजे से शाम 5 बजे तक के बीच में कभी भी सैट किया जा सकता है।

(2) जहाँ एक से अधिक केन्द्र हों, वे आपस में मिलकर समय निश्चित करें।

(3) यदि किन्हीं विषयों के छात्र आपस में टकराते हों तो परीक्षा सुविधानुसार दिन में दो बार ली जा सकती है।

(4) बालबोध पाठमाला भाग 1, 2, 3 और जैन बालपोथी भाग 1 व 2 की परीक्षायें मौखिक लेवें। शेष सभी विषयों की परीक्षायें लिखित में लेवें।

## वेदी प्रतिष्ठा महोत्सव सानन्द सम्पन्न

**1.अलवर (राज.) :** यहाँ श्री दिगम्बर जैन कुन्दकुन्द स्मृति ट्रस्ट, अलवर के तत्त्वावधान में दिनांक 20 एवं 21 जून, 2004 को श्री पंचपरमेष्ठी विधान एवं श्री महावीरस्वामी जिनबिम्ब वेदी प्रतिष्ठा महोत्सव का आयोजन हुआ।

इस अवसर पर विधि-विधान के सम्पूर्ण कार्य बाल ब्र. पण्डित जतीशचन्दजी शास्त्री सनावद, ब्र. अभिनन्दनकुमारजी शास्त्री खनियांधाना, पण्डित प्रेमचन्दजी शास्त्री अलवर, पण्डित प्रयंककुमारजी शास्त्री रहली एवं पण्डित सुनीलकुमारजी बेलोकर सुलतानपुर द्वारा सम्पन्न कराये गये।

**2. विहिगाँव (महा.) :** यहाँ श्री पार्श्वनाथ दि. जिनमंदिर में 20 एवं 21 जून, 2004 को वेदी प्रतिष्ठा महोत्सव का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर विधि-विधान के सम्पूर्ण कार्य पण्डित संजयजी शास्त्री नागपुर एवं पण्डित आलोकजी शास्त्री कारंजा के सान्निध्य में सम्पन्न कराये गये।

इस अवसर पर अनेक विद्वानों के प्रवचनों का लाभ मिला।

## ब्र. यशपालजी द्वारा धर्म प्रभावना

**डोंबिवली (पूर्व) :** यहाँ श्री महावीर दि. जैन मंदिर में दिनांक 31 मई से 8 जून, 2004 तक प्रतिदिन प्रात: एवं सायंकाल ब्र. यशपालजी जैन, जयपुर के जिनधर्मप्रवेशिका एवं छहढाला की पाँचवी ढाल पर सारगर्भित प्रवचन हुये।

आपके द्वारा यहाँ कण्ठपाठ आदि अनेक कार्यक्रम भी कराये गये। स्थानीय समाज ने आपका बहुत-बहुत आभार माना।

## वैराग्य समाचार

**1. जबलपुर निवासी** सेठ सुमेरचन्दजी जैन का 91 वर्ष की आयु में 29 अप्रैल, 2004 को देहावसान हो गया। आप जीवन पर्यंत गुरुदेवश्री कानजीस्वामी द्वारा प्ररूपित तत्त्वज्ञान से जुड़े रहे। गुरुदेवश्री के सान्निध्य में आपने अनेकों धर्मयात्रायें की। नैरोबी (अफ्रीका) पंचकल्याणक महोत्सव में भी आपका योगदान रहा। आपकी स्मृति में जैनपथप्रदर्शक समिति एवं वीतराग-विज्ञान को 202/- रुपये प्राप्त हुये हैं; एतदर्थ धन्यवाद !

**2. छिन्दवाड़ा निवासी** श्री विनोदकुमारजी जैन का 46 वर्ष की आयु में दिनांक 5 जून, 2004 को देहावसान हो गया है। बचपन से ही आपको गुरुदेवश्री का सान्निध्य प्राप्त हुआ, जिससे व्यापार आदि कार्यों को गौण करके आप जिनवाणी की सेवा में अर्हनिश समर्पित रहे।

ज्ञातव्य है कि गुरुदेवश्री के प्रवचनसार ग्रन्थ पर हुये गुजराती प्रवचनों का 'दिव्यध्वनिसार' के रूप में हिन्दी अनुवाद आपके द्वारा ही किया गया है।

3. महाविद्यालय के स्नातक पण्डित संतोषकुमारजी शास्त्री (सावजी) के पिताश्री देवीचन्दजी जैन, अम्बड़-जालना (महा.) का दिनांक 23 जून, 04 को देहावसान हो गया है। आपकी स्मृति में वीतराग-विज्ञान एवं जैनपथप्रदर्शक समिति को 151/-रुपये प्रदान किये गये।

दिवंगत आत्मायें शीघ्र ही अभ्युदय को प्राप्त हों - यही हमारी मंगल कामना है।

**ह्न प्रबन्ध सम्पादक**

**( पृष्ठ – 3 का शेष ...)**

यह शुद्ध-अशुद्ध जीव का सामान्य लक्षण हुआ। **कर्मचेतना और कर्मफलचेतना अशुद्ध जीव का लक्षण है** और **ज्ञानचेतना शुद्ध जीव का लक्षण है। यहाँ अस्तिकाय का वर्णन है।** अतः यदि कर्मरूप पुद्गलास्तिकाय के कारण जीवास्तिकाय में शुद्ध या अशुद्ध परिणमन माना जाए तो जीवास्तिकाय का अस्तित्व नहीं रहता। इसलिए ऐसा माननेवाला जीवास्तिकाय को नहीं पहिचानता। ज्ञान में एकाग्र होना, राग में एकाग्र होना अथवा हर्ष-शोक में एकाग्र होना जीवास्तिकाय में होता है। वह चारित्रमोह के कारण होता है ह्न ऐसा माननेवाले को जीवास्तिकाय की श्रद्धा नहीं है।

ज्ञानावरणीय कर्म के कारण जीव में अल्पज्ञान होता है ह्न ऐसा है ही नहीं। ज्ञान की हीनता स्वयं के कारण होती है ह्न ऐसा जाने तो 'आत्मा पर से भिन्न है और पर्याय में रागादि होते हैं, वे आत्मा के स्वभाव नहीं है' ह्न ऐसी द्रव्यदृष्टि होती है।

अब उपयोग लक्षण कहते हैं। जो चैतन्यभाव की परिणतिरूप प्रवर्ते वह उपयोग है। यह उपयोग आत्मा का गुण है; क्योंकि वह आत्मा की ताकत से होता है, कर्म के कारण नहीं। उसे पुद्गल से हुआ मानने पर पुद्गलास्तिकाय से जीवास्तिकाय का अस्तित्व है ह्न ऐसा प्रसंग आता है; परन्तु ऐसा नहीं है। आत्मा स्वयं उपयोगरूप प्रवर्तता है। पाँच इन्द्रियाँ और मन है इसलिए उपयोग है ह्न ऐसा नहीं; अपितु चैतन्यभाव की परिणति ही उपयोग है; जिसके द्वारा जीव ज्ञात होता है।

इसप्रकार जीव का लक्षण चेतना और उपयोग है। यहाँ इनको गुण गिनने का कारण यह है कि ये दोनों अपनी शक्ति के कारण से हैं।

अब पर्याय की बात करते हैं। श्री कुन्दकुन्दाचार्यदेव ने मूल गाथा में अशुद्धपर्याय की बात की है। श्री अमृतचन्द्राचार्य ने शुद्ध पर्याय की बात भी साथ ही की है। जिसप्रकार आत्मा में चेतना और उपयोग गुण शुद्ध और अशुद्ध है, उसीप्रकार पर्याय के भी शुद्ध और अशुद्ध प्रकार हैं। जो अगुरुलघु गुण की षटगुण हानिवृद्धिरूप पर्याय है वह तो शुद्धपर्याय कहलाती है।

परद्रव्यों के संबंध से चारगतिरूप नर-नारकादि की व्यंजनपर्यायें अशुद्धपर्यायें हैं। देव, मनुष्य, नारकी और तिर्यंच की पर्यायें आत्मा में होती हैं, अतः वे आत्मा का भाव है; कर्म का नहीं। नर-नारकादि शरीर के कारण भी वे पर्यायें नहीं होती। आत्मा की वे अशुद्ध व्यंजनपर्यायें जीवास्तिकाय को बतलाती हैं। जीव अपनी योग्यता से चींटी, हाथी, सिंह आदि के शरीर में है, जीव स्वयं उस आकाररूप होता है। नरक में जाने पर यह होनेवाला देहप्रमाण आकार जीव का है।

यहाँ स्थूल ऋजुसूत्रनय की अपेक्षा से दीर्घकाल तक रहनेवाली नारकी आदि पर्यायों को पर्याय कहा है। नारकी से मनुष्य हो, मनुष्य से देव हो अथवा मनुष्य से तिर्यंच हो ह्न इसप्रकार पर्याय बदलती है, उसको यहाँ स्थूल पर्याय की अपेक्षा से व्यंजनपर्याय कहा है। वह पर्याय जीव की है; क्योंकि उसके आकाररूप जीव होता है, कर्म या शरीर नहीं होता।''

इसप्रकार इस गाथा में शुद्धाशुद्ध पर्यायों के पिण्ड को द्रव्य प्रसिद्ध करते हुए जीव द्रव्य का स्वरूप दर्शाया गया है। जीवद्रव्य के लक्षणों को परिभाषित करते हुए चेतना और उपयोग के भेद-प्रभेदों की चर्चा करके उन्हें जीव लक्षण प्रसिद्ध किया है तथा निमित्तों को अत्यन्त गौण करते हुए उन्हें जीव की स्वयं की योग्यता से प्रसिद्ध किया है। साथ ही समयसार के दृष्टिप्रधान कथन से भिन्न इसे ज्ञानप्रधान कथन बतलाया है। ●

**( घर-घर में संस्कार पहुँचे ...पृष्ठ-1 का शेष)**

विद्वानों में पण्डित राकेशकुमारजी शास्त्री नागपुर, पण्डित आलोकजी शास्त्री कारंजा, पण्डित नन्दकिशोरजी मांगुलकर काटोल, पण्डित संजयकुमारजी शास्त्री नागपुर, पण्डित विरागजी शास्त्री जबलपुर, पण्डित अशोकजी मांगुलकर राघौगढ़, पण्डित अभिनवजी शास्त्री मैनपुरी, पण्डित स्वप्निलजी शास्त्री नागपुर एवं पण्डित रवीन्द्रजी काले, कारंजा का कक्षाओं एवं प्रवचनों के माध्यम से लाभ मिला। **ह्न अशोक जैन**

**6. आरोन (म.प्र.) :** यहाँ श्री दिगम्बर जैन मंदिर में दिनांक 1 जून से 7 जून, 04 तक बाल संस्कार शिविर का आयोजन किया गया।

शिविर में प्रतिदिन प्रातः पण्डित सुनीलजी 'धवल' के प्रवचन हुये तथा दोपहर एवं रात्रि में पण्डित रितेशजी शास्त्री सनावद द्वारा कक्षा एवं मोक्षमार्गप्रकाशक पर प्रवचन किये।

शिविर का संचालन पण्डित प्रदीपकुमारजी शास्त्री दमोह ने किया। आपके द्वारा दोपहर में छहढाला की कक्षा भी ली गई।

प्रतिदिन रात्रि में सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन किया गया।

**7.अकोला (महा.) :** स्व. सौ. आशादेवी सोहनलालजी अजमेरा, अकोला की पावन स्मृति में श्री शांतिनाथ दिगम्बर जैन चैत्यालय में दिनांक 11 जून से 17 जून, 2004 तक जैन संस्कार शिक्षण शिविर का आयोजन किया गया।

शिविर में ब्र. यशपालजी जैन, जयपुर द्वारा प्रतिदिन प्रातः एवं रात्रि में जिनधर्मप्रवेशिका तथा दोपहर में गुणस्थान विवेचन के माध्यम से अत्यन्त मार्मिक कक्षायें ली गई।

इसके अतिरिक्त पण्डित अमोलकुमारजी संघई शास्त्री हिंगोली के प्रवचन तथा बालबोध पाठमाला भाग-3 की कक्षा ली गई। पण्डित प्रशान्तकुमारजी मोहरे शास्त्री सोलापुर ने बालबोध पाठमाला भाग-2, पण्डित दिग्विजयजी आलमान हेरले, पण्डित शितलजी आलमान हेरले एवं पण्डित रविन्द्रजी काले, कारंजा ने दोनों समय बालबोध पाठमाला भाग-1 की कक्षा ली।

ज्ञातव्य है कि पण्डित दिग्विजयजी आलमान द्वारा नगर के शेणगण दि. जैन मन्दिर में भी कक्षा एवं प्रवचन का लाभ समाज को प्राप्त हुआ।

**8.अजमेर (राज.) :** यहाँ श्री वीतराग-विज्ञान स्वाध्याय मन्दिर ट्रस्ट द्वारा दिनांक 16 जून से 23 जून, 2004 तक बाल संस्कार शिक्षण शिविर का आयोजन किया गया।

प्रतिदिन दोनों समय पण्डित देवेन्द्रकुमारजी जैन, बिजौलियाँ के प्रवचन हुए।

प्रातः नित्यनियम पूजन पण्डित विपिनकुमारजी शास्त्री श्योपुर, पण्डित सुनीलजी 'धवल' भोपाल एवं पण्डित अनुजजी जैन जयपुर द्वारा कराई गई। साथ ही आपके द्वारा विभिन्न कक्षायें भी ली गई।

तत्त्वचर्चा

# प्रवचनसार का सार 10

– डॉ॰ हुकमचन्द भारिल्ल

जिसप्रकार एक खम्बे में भूतकाल, वर्तमान और भविष्यकाल की चौबीसी बना देते हैं; तब तीनों चौबीसियाँ एकसाथ दिखाई देती हैं। इसमें ऐसा नहीं है कि भूतकाल की चौबीसी थोड़ी कम दिखती होगी और भविष्यकाल की धुँधली दिखती होगी।

ऐसा समझ लो कि अभी हम शीतलनाथ भगवान के समय में हैं और हमने चौबीसी मंदिर की प्रतिष्ठा कर दी। हमने 24 मूर्तियाँ नहीं रखी हैं; अपितु सभी एक ही खम्बे में उत्कीर्ण की हैं। शीतलनाथ भगवान तो समवशरण में विद्यमान है। पुष्दंत भगवान तक मोक्ष चले गए हैं। भगवान श्रेयांसनाथ से भगवान महावीर तक अभी मोक्ष नहीं गए हैं।

**यदि हम उस खम्बे को देखते हैं तो हमारे क्षयोपशमज्ञान में एकसाथ चौबीसों मूर्तियाँ दिखाई देती हैं। ऐसे ही भगवान के केवलज्ञान में भूतकाल की अनंत चौबीसियाँ और भविष्यकाल की अनन्त चौबीसियाँ दिखाई देती हैं।**

भविष्यकाल की अनंत चौबीसियाँ उनके ज्ञान में आ गई हैं; इसका अर्थ यह है कि अनंत चौबीसियाँ निश्चित हैं। इसके आधार पर क्रमबद्धपर्याय का सिद्धान्त सिद्ध होता है। यही कारण है कि मैंने 'क्रमबद्ध-पर्याय' नामक पुस्तक में यह लिखा है कि यदि आप क्रमबद्धपर्याय नहीं मानते हो तो मत मानो; लेकिन सर्वज्ञता की बात तो करो। क्रमबद्ध-पर्याय के लिए सर्वज्ञता की तिलाञ्जलि क्यों देते हो ? अरे भाई ! जैनियों का सम्पूर्ण न्यायशास्त्र सर्वज्ञता की सिद्धि के लिए ही समर्पित है।

कुछ लोग कहते हैं कि भविष्य में होनेवाली पर्यायें तो अभी हुई ही नहीं हैं; उन्हें सर्वज्ञ भगवान कैसे जान सकते हैं ?

उक्त संदर्भ में निम्नांकित गाथा दृष्टव्य है ह्न

**जदि पच्चक्खमजादं, पज्जायं पलयिदं च णाणस्स।**
**ण हवदि वा तं णाणं, दिव्वं ति हि के परूवेंति।।39।।**

यदि अनुत्पन्न और नष्ट पर्यायें ज्ञान (केवलज्ञान) के प्रत्यक्ष नहीं होती हों, तो वास्तव में उस ज्ञान को दिव्य कौन कहेगा ?

यदि केवलज्ञान में भूत और भावी पर्यायें नहीं झलकती हैं तो उस ज्ञान को दिव्य कौन कहेगा ? इससे तो हमारा मतिज्ञान ही अच्छा है; जो थोड़ा बहुत भविष्य जान लेता है। कल बुधवार है। अनंतकाल के बाद भी बुधवार, मंगलवार के बाद ही आएगा। भविष्य में होनेवाली ऐसी बहुत-सी बातें हम जानते हैं, तब हमारा ही ज्ञान अच्छा है, जो कम से कम इतना तो जानता है।

अरे भाई ! यदि सर्वज्ञता ख्याल में आ गई तो कुछ भी शेष नहीं रह जाता है; परन्तु यदि सर्वज्ञता समझ में नहीं आई तो चाहे जितना जैनदर्शन समझ लीजिए; कुछ भी होनेवाला नहीं है।

यदि सर्वज्ञता समझ में नहीं आई तो तीर्थों के नाम पर अतिशय खड़े होते जाएँगे; पुत्रादिक देनेवाले, भूत भगवानेवाले देव खड़े हो जाएँगे।

**एक सर्वज्ञता समझ में आई तो अनिवार्यरूप से सम्यग्दर्शन प्रगट होगा। ऐसा समझ लीजिए की पूरीतरह से सर्वज्ञता तभी समझ में आएगी; जब निकट भविष्य में सम्यग्दर्शन की प्राप्ति होनेवाली हो।**

**जो जाणदि अरहंतं दव्वत्तगुणत्तपज्जयत्तेहिं।**
**सो जाणदि अप्पाणं मोहो खलु जादि तस्स लयं।।80।।**

जो अरहंत को द्रव्यरूप से, गुणरूप से और पर्यायरूप से जानता है; वह आत्मा को जानता है और उसका मोह निश्चय से नष्ट होता है।

अरहंत को द्रव्य-गुण-पर्याय से जानेगा अर्थात् सही अर्थ में सर्वज्ञता को जानेगा; वीतरागता को जानेगा; उसके मिथ्यात्व का नाश होगा, उसे सम्यक्त्व की प्राप्ति होगी।

40-50 वर्ष पूर्व ज्ञानपीठ की ओर से एक 'ज्ञानोदय' नामक अखबार निकलता था। बहुत स्तरीय मासिक था। इसका एक विशेषांक निकला था; जिसका विषय था '100 साल के बाद दुनियाँ में क्या होगा?' करीब 600 पृष्ठ का यह विशेषांक लगभग 47-48 वर्ष पूर्व प्रकाशित हुआ था।

उसमें एक लेख जीवविज्ञान के सन्दर्भ में था।

एक लेखक ने लिखा था कि पेट में बच्चे रखने से माता-बहिनों को बहुत कष्ट होता है। 100 साल बाद महिलाएँ इस कष्ट से मुक्त हो जाएंगी और बाजार में बच्चे वैसे ही मिलेंगे जैसे आज कुत्ता-बिल्ली मिलते हैं। जैसे आप गाय, भैंस, कुत्ते, बिल्ली खरीद लाते हैं; वैसे ही इन्जीनियर बच्चे, डॉक्टर बच्चे; सब प्रकार के बच्चे खरीद लायेंगे। यदि कोई आदमी चाहे तो उनकी इच्छा के अनुसार बच्चे तैयार करा दिए जाएँगे।

'आदमी की उन्नति में सबसे बड़ी बाधा यह सेक्स प्राब्लम (कामेच्छा) है। यह मानव मस्तिष्क को बहुत आन्दोलित करती है। न जाने इसके कारण कितनी समस्याएँ खड़ी हो जाती है।' ह्न ऐसा सोचकर एक पति ने पत्नी से कहा कि ह्न

''कामेच्छावाला व्यक्ति पूर्णरूप से तरक्की नहीं कर सकता; इसलिए मुझे ऐसा बच्चा चाहिए; जिसमें सेक्स की भावना ही न हो। स्त्रियों का पुरुषों के प्रति और पुरुषों का स्त्रियों के प्रति जो आकर्षण होता है, विषयभोग का भाव होता है; वह उस बच्चे के अन्दर बिल्कुल ही नहीं होना चाहिए।''

तब उसकी पत्नी ने कहा कि ह्न ''नहीं, यह तो बहुत जरूरी है।''

लेकिन वह पुरुष नहीं माना और उसने ऑर्डर दे दिया कि इसमें वह रसायन नहीं डाला जाय; जिससे सेक्स की भावना पैदा होती है।

ऑर्डर के अनुसार प्राप्त बच्चा 25-30 वर्ष का जवान हो गया; परन्तु उसके अन्दर सेक्स भावना तो बिल्कुल थी ही नहीं। अत: वह निरन्तर अपने वैज्ञानिक प्रयोगों में लगा रहता था। वह खूबसूरत, सुंदर और शक्तिसम्पन्न था; पर उसमें विषय-वासना का लेश न था।

एक बार एक सुंदर लड़की उस पर मोहित हो गई। वह लड़की अपने हाव-भावों से अपना अभिप्राय व प्रेम प्रगट करती; परन्तु उसकी समझ में कुछ भी नहीं आता।

वह आँख का बहुत बड़ा डॉक्टर बन गया था। उससे प्रेम करनेवाली लड़की ने उससे प्रेम प्रगट करने के लिए एक बार कहा कि ह्न

''तुम मेरी आँखों में आँखे डालकर तो देखो।''

उसने अच्छीतरह से उसकी आँखें देखी। आँखे देखने के बाद उसने बड़े ही वीतरागभाव से कहा कि ह्न 'तुम्हारी आँखें ठीक वैसी ही हैं; जैसी

की स्तनधारी प्राणियों की होती हैं।'

जब उस लड़के ने ऐसा कहा तो उसकी माँ रोने लगी। वह अपने पति से कहने लगी ह्न ''मैंने कहा था कि ऐसा मत करो। देखो क्या हालत हो गई है।''

इस कथन का आशय मात्र इतना ही है कि वीतरागता का वास्तविक स्वरूप क्या है, सर्वज्ञता क्या है ह्न हम एकबार इसकी कल्पना तो करें।

यदि अंदर राग का तत्त्व विद्यमान है तो प्रतिक्रिया रागवाली होगी। इस बात पर हमें गंभीरता से विचार करना चाहिए; मात्र पढ़ने से काम नहीं चलेगा। सर्वज्ञता और वीतरागता पर मैंने महिनों सोचा है। जो कुछ जिनवाणी में पढ़ा है, वह तो बहुत सीमित है। मैंने एक-एक गुणस्थान पर सोचा है।

छठवें-सातवें गुणस्थानवाले साधुओं के अंदर जो तीन कषाय चौकड़ी के अभावरूप स्थिति है, उसका स्वरूप कैसा होना चाहिए? किन-किन परिस्थितियों में उनकी प्रतिक्रिया कैसी होनी चाहिए ? अप्रत्याख्यानावरण कषाय का कार्य क्या है ? अनंतानुबंधी कषाय का कार्य क्या है ? ये कषायें साधुओं के नहीं हैं तो उनसे कौन-से कार्य नहीं होंगे ? इन सब बातों पर गंभीर चिंतन की आवश्यकता है।

मैं कहता हूँ कि भगवान वीतरागी हैं, सर्वज्ञ हैं और संपूर्ण लोकालोक को जानते हैं; ऐसी स्थिति में उनका ज्ञान कैसा होता होगा ह्न इसकी कल्पना करें। अरे, कम से कम एक बार कल्पना में तो मुनि बनिए। छठवें सातवें गुणस्थान की कल्पना तो कीजिए। मेरा कहने का आशय यह है कि ज्ञान को दौड़ाओ, अकेले शास्त्रों से ही नहीं, शास्त्रज्ञान के साथ-साथ चिन्तन भी होना चाहिए।

अतीन्द्रियज्ञान (सर्वज्ञता) के संदर्भ में आचार्यदेव कहते हैं ह्न

**अत्थं अक्खणिवदिदं ईहापुव्वेहिं जे विजाणंति।**
**तेसिं परोक्खभूदं णादुमसक्कं ति पण्णत्तं ।।40।।**

जो इन्द्रियज्ञानगोचर पदार्थों को ईहादिपूर्वक जानते हैं, उन्हें परोक्षभूत पदार्थों का जानना अशक्य है - ऐसा जिनेन्द्रदेव कहते हैं।

हमारा मतिज्ञान अवग्रह, ईहा, अवाय और धारणापूर्वक प्रवृत्ति करता है; किन्तु केवलज्ञान में ऐसा नहीं होता। हम इसी मतिज्ञान के रूप में उनके ज्ञान को देखने की कोशिश करते हैं। हम ऐसा सोचने लगते हैं कि उन्हें भी समयसार की सब गाथाएँ याद होंगी।

अरे भाई ! उन्हें मतिज्ञान नहीं है। उन्हें स्मृति की कुछ आवश्यकता ही नहीं है; क्योंकि उन्हें तो वर्तमान में ही सब प्रत्यक्ष है। हम हमारे मतिज्ञान से उनके ज्ञान की तुलना करते हैं; इसलिए केवलज्ञान का स्वरूप हमारे ख्याल में नहीं आता।

इसके सन्दर्भ में यह 41वीं गाथा और अधिक महत्त्वपूर्ण है ह्न

**अपदेसं सपदेसं मुत्तममुत्तं च पज्जयमजादं।**
**पलयं गदं च जाणदि तं णाणमदिंदियं भणियं ।।41।।**

जो ज्ञान अप्रदेशी-एकप्रदेशी, सप्रदेशी-बहुप्रदेशी, मूर्तिक-अमूर्तिक पदार्थों को तथा अनुत्पन्न और नष्ट पर्यायों को जानता है; उसे अतीन्द्रिय ज्ञान कहते हैं।

देश के किसान और मजदूर तो यह जानना चाहते हैं कि उनके लिए रोजी-रोटी और कपड़े का इंतजाम कब होगा ? उसके खेत को पानी कब मिलेगा, खेत को बिजली कब मिलेगी ?

उसको राजनीति के इस खेल में थोड़ा भी रस नहीं है कि गांधीजी की मूर्ति कहाँ लगेगी और कहाँ नहीं लगेगी ? अम्बेडकर की मूर्ति लगेगी या गांधीजी की ? लोकसभा में किस-किसके फोटो लगेंगे ? आर. एस. एस. की शाखा कहाँ लगेगी और कहाँ नहीं ?

इन सब बातों से मजदूर और किसानों को कुछ लेना-देना नहीं है।

किसान तो यह चाहता है कि देश की तरक्की किसप्रकार हो ह्न सभी लोग यह बात करें। आजादी के 55 वर्ष बाद आज भी हर गरीब को रोटियाँ नहीं मिल पाईं। भूखे व नंगे लोग आज भी हैं। ये राजनेता उनकी तो बात ही नहीं करते और जरा-जरा से मुद्दों पर लड़ते-झगड़ते रहते हैं।

ऐसे ही सारे समाज में कितना अज्ञान है ? बच्चों में धार्मिक संस्कार समाप्त होते जा रहे हैं; खान-पान का ठिकाना नहीं रहा है; स्वाध्याय करने के लिए जगह नहीं है; इस मुमुक्षु समाज के बच्चों में संस्कार कब आएँगे, कैसे आएँगे, इस बारे में हमें क्या करना है ? इसपर तो किसी का ध्यान नहीं जाता; पर जिन्हें कुछ काम नहीं है, घरवालों ने धक्का देकर बाहर निकाल दिया है ह्न ऐसे कुछ व्यक्ति मंदिर में जाकर बैठ जाते हैं और आत्मा पर को जानता है या नहीं ह्न इस पर बहस करने लगते हैं, पार्टियाँ और ग्रुप्स बन जाते हैं। अरे भाई ! यह कोई समस्या नहीं है, समयसार आदि के स्वाध्याय से यह बात तो अपने आप समझ में आ जाएगी; जिनवाणी के पठन-पाठन से सम्पूर्ण विषयवस्तु स्वत: स्पष्ट हो जाएगी।

हमारे पास सर्व समाधानकारक जिनवाणी माता है, गुरुदेवश्री की वाणी है। अत: इस चर्चा से विराम लो और जिनवाणी का गहराई से अध्ययन करो।

इन गाथाओं में सबकुछ साफ-साफ लिखा है; हमें उसे आरंभ से अंत तक पढ़ना चाहिए। हम किसी भी गाथा को उठा लेते हैं और खींच-तान कर चर्चा करने लग जाते हैं।

**जो पर्यायें अभी उत्पन्न नहीं हुई हैं तथा जो पर्यायें प्रलय को प्राप्त हो गई हैं; जो ज्ञान इन सबको जानता है, उसे ही अतीन्द्रिय ज्ञान कहते हैं।**

**जो ज्ञान अप्रदेशी-एकप्रदेशी, सप्रदेशी-बहुप्रदेशी, मूर्तिक-अमूर्तिक पदार्थों को तथा अनुत्पन्न और नष्ट पर्यायों को जानता है; उसे अतीन्द्रियज्ञान कहते हैं।**

जो अकेले आत्मा को जाने उस ज्ञान का नाम अतीन्द्रिय ज्ञान है - ऐसा यहाँ कहाँ लिखा है ? छहों द्रव्यों की पर्यायों को जाने उसका नाम भी अतीन्द्रिय ज्ञान ही है।

फिर भी यह कहता है कि अतीन्द्रिय ज्ञान आत्मा को जानता है और इन्द्रियज्ञान पर को जानता है।

अरे भाई ! इन्द्रियज्ञान तो मतिश्रुतज्ञान का नाम है। मतिश्रुतज्ञान का विषय तो छहों द्रव्यों की असर्व पर्यायें हैं। जैसाकि मोक्षशास्त्र में लिखा हैह्न **'मतिश्रुतयोर्निबन्धो द्रव्येष्वसर्वपर्यायेषु।'** फिर यहाँ मतिज्ञान व केवलज्ञान में स्व-पर का भेद कहाँ है ? हाँ, यह बात अवश्य है कि अवधिज्ञान व मन:पर्ययज्ञान मात्र पर को ही जानते हैं। उनका विषय पुद्गलद्रव्य ही है, वे स्व को नहीं जानते। **(क्रमश:)**

रजिस्ट्रेशन आर. एन. आई. 31109/77

## पंचम बाल संस्कार शिक्षण शिविर एवं 170 तीर्थंकर मण्डल विधान सानन्द सम्पन्न

**उदयपुर (राज.) :** श्री कुन्दकुन्द वीतराग-विज्ञान शिक्षण समिति, उदयपुर द्वारा जवाहर जैन शिक्षण संस्थान, हिरणमगरी, सैक्टर-11 में दिनांक 13 जून से 20 जून, 2004 तक पंचम बाल संस्कार शिक्षण-शिविर एवं एक सौ सत्तर तीर्थंकर मण्डल विधान का आयोजन किया गया ।

इस अवसर पर प्रतिदिन प्रात: 170 तीर्थंकर मण्डल विधान के उपरान्त दो प्रवचनों में डॉ. योगेशजी शास्त्री अलीगंज, पण्डित संजीवकुमारजी गोधा जयपुर एवं पण्डित मनीषजी शास्त्री रहली के प्रवचनों का लाभ मिला।

दोपहर में बाल कक्षाओं के अतिरिक्त विदुषी राजकुमारी बहन जयपुर द्वारा 'जैसी मति वैसी गति' विषय पर एवं पण्डित मनीषकुमारजी शास्त्री रहली द्वारा क्रमबद्धपर्याय पर कक्षा ली गई।

सायंकाल जिनेन्द्र भक्ति के पश्चात् बालकों के लिये ज्ञानवर्धक सांस्कृतिक कार्यक्रम कराये गये। तदुपरान्त दो प्रवचनों में पण्डित बाबूभाई मेहता फतेपुर, डॉ. योगेशजी अलीगंज, पण्डित धनसिंहजी 'ज्ञायक' पिड़ावा एवं पण्डित संजीवकुमारजी गोधा जयपुर के प्रवचनों का लाभ मिला।

शिविर के सम्पूर्ण कार्य पण्डित राजकुमारजी शास्त्री बांसवाड़ा एवं पण्डित महावीरप्रसादजी शास्त्री, उदयपुर के निर्देशन में सम्पन्न हुए।

शिविर में 484 बालकों को उनकी आयु के अनुसार 9 विशेष कक्षाओं में विभाजित किया गया; जिसमें उक्त विद्वानों के अतिरिक्त पण्डित कोमलचन्दजी जैन टड़ा, पण्डित कमलचन्दजी जैन पिड़ावा, पण्डित रीतेशकुमारजी शास्त्री डडूका, पण्डित वीरेन्द्रकुमारजी शास्त्री डडूका, पण्डित हेमन्तकुमारजी शास्त्री उदयपुर, पण्डित निलयकुमारजी शास्त्री टीकमगढ़, पण्डित आशीषकुमारजी शास्त्री टीकमगढ़, पण्डित गणतंत्रजी शास्त्री खरगापुर, पण्डित जिनेन्द्रकुमारजी शास्त्री उदयपुर, पण्डित प्रक्षालजी शास्त्री उदयपुर एवं पण्डित स्वतंत्रजी शास्त्री जयपुर द्वारा मनोवैज्ञानिक पद्धति से बालकों में धार्मिक संस्कारों का बीजारोपण किया गया।

विधि-विधान के सम्पूर्ण कार्य पण्डित धनसिंहजी 'ज्ञायक' पिड़ावा, पण्डित मनीषकुमारजी शास्त्री पिड़ावा एवं श्री राजेन्द्रजी जैन टीकमगढ़ द्वारा सम्पन्न कराये गये।

### जुलाई माह में आनेवाली तीर्थंकरों के पंचकल्याणकों की तिथियाँ

| | |
|---|---|
| **4 जुलाई** | – भगवान मुनिसुव्रतनाथ का गर्भकल्याणक |
| **11 जुलाई** | – भगवान कुन्थुनाथ का गर्भकल्याणक |
| **19 जुलाई** | – भगवान सुमतिनाथ का गर्भकल्याणक |
| **23 जुलाई** | – भगवान नेमिनाथ का जन्म एवं तप कल्याणक |
| **24 जुलाई** | – भगवान पार्श्वनाथ का मोक्षकल्याणक |
| **31 जुलाई** | – भगवान श्रेयांसनाथ का मोक्षकल्याणक |

## छात्रवृत्तियाँ वर्ष : 2004-2005

भारत में मान्यताप्राप्त स्कूलों/कॉलेजों/ प्रशिक्षण संस्थानों में अध्ययनरत छात्रों के लिये योग्यता तथा कमजोर आर्थिक स्थिति के आधार पर छात्रों को जैन सोशल वैलफेयर एसोसिएशन द्वारा दो श्रेणियों में छात्रवृत्तियाँ प्रतिवर्ष उपलब्ध कराई जाती है।

**(क) नॉन रिफन्डेबल (वापिस न देनेवाली) छात्रवृत्ति :** नान-तकनीकी, माध्यमिक, उच्च माध्यमिक, स्नातक व स्नातकोत्तर आदि शिक्षा के लिये 50/-रुपये से 250/- रुपये तक मासिक छात्रवृत्ति दी जाती है।

**(ख) रिफन्डेबल (वापिस चुकाई जानेवाली) ब्याजमुक्त ऋण के रूप में छात्रवृत्ति :** तकनीकी इंजिनीयरिंग, कम्प्यूटर,मेडिकल, बिजनिस मैनेजमेंट व जैनदर्शन में अनुसंधान आदि पाठ्यक्रमों में उच्च शिक्षा के लिये प्रतिभाशाली छात्रों को 500/- से 1000/- रुपये तक छात्रवृत्ति दी जाती है।

निर्धारित आवेदन-पत्र एक लिफाफे पर स्वयं का पता लिखकर और पाँच रुपये का डाक टिकिट लगाकर भेजने से प्राप्त हो सकता है। सम्पूर्ण विवरण सहित आवेदन पत्र कार्यालय में पहुँचने की अंतिम तिथि 31 अगस्त 2004 है।

**– मंत्री (छात्रवृत्ति),** जैन सोशल वैलफेयर एसोसिएशन,
ई-9, ग्रीनपार्क एक्सटैन्शन, नई दिल्ली-110016

### ✲ जयपुर में शिक्षण शिविर 8 अगस्त से ✲

श्री टोडरमल स्मारक भवन में श्री कुन्दकुन्द कहान दिगम्बर जैन तीर्थसुरक्षा ट्रस्ट, मुंबई की ओर से लगनेवाला आध्यात्मिक शिक्षण-शिविर 8 अगस्त से 17 अगस्त, 2004 तक टोडरमल स्मारक भवन, ए-4, बापूनगर, जयपुर में लगेगा। आप सभी मुमुक्षु भाई-बहिनों को धर्मलाभ लेने हेतु हमारा भावभीना आमंत्रण है।

**जैनपथप्रदर्शक (पाक्षिक) जुलाई (प्रथम) 2004**
**J. P.C. 3779/02/2003-05**

**प्रति,**

सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** शास्त्री, न्यायतीर्थ, साहित्यरत्न, एम.ए., बी.एड.
प्रबन्ध सम्पादक : **पण्डित संजीवकुमार गोधा,** डबल एम.ए.जैनविद्या व तुलनात्मक धर्मदर्शन तथा इतिहास ✲ **पं. जितेन्द्र वि.राठी शास्त्री**
प्रकाशक एवं मुद्रक : **ब्र. यशपाल जैन** द्वारा जैनपथप्रदर्शक समिति के लिए जयपुर प्रिण्टर्स प्रा.लि., एम. आई. रोड, जयपुर से मुद्रित तथा त्रिमूर्ति कम्प्यूटर्स, ए-4, बापूनगर, जयपुर से प्रकाशित।

*यदि न पहुँचे तो कृपया निम्न पते पर भेजें –*
ए- 4 बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)
**फोन :** (0141) 2705581, 2707458
**तार :** त्रिमूर्ति, जयपुर **फैक्स :** 2704127